वैदिक वाङ्मय में मंत्रद्रष्ट्री ऋषिकाओं का योगदान

पूनम पाठक

प्रोफेसर एवं विभागाध्यक्षा, संस्कृत विभाग, पं0 ललित मोहन शर्मा परिसर, ऋषिकेश

सार

वेद अपरिमित ज्ञान के भण्डार हैं। विश्व को संस्कृति का ज्ञान देने का श्रेय वेदों को ही जाता है। वेद सभी विद्याओं के प्रथम उद्घोषक हैं । मनु ने वेदों को सभी विद्याओं का मूलाधार कहा है-'सर्वज्ञानमयो हि सः'। इस प्रकार सभी विद्याओं के मूल में निहित वेदों के विषय में अनुसंधान करने पर यह स्पष्टतः प्रकट होता है कि मन्त्रद्रष्टा ऋषियों के साथ ही अनेक विदुषी स्त्रियाँ भी मन्त्रों का साक्षात्कार करने वाली ऋषिकाओं के रुप में प्रतिष्ठित हुई हैं। ऋग्वेद में अनेक ऐसे प्रकरण पाये जाते हैं जो इन महिमामयी नारियों को मन्त्रद्रष्ट्री ऋषिकाओं अथवा देवियों के रुप में प्रतिष्ठापित करते हैं। वैदिक वाङ्मय में इन ब्रह्मवादिनी स्त्रियों का अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान है। ये वैदिक कालीन स्त्रियों का सशक्त प्रतिनिधित्व करती हैं , तथा वर्तमान समाज के लिए प्रेरणा स्रोत हैं।

मुख्य शब्दः- मन्त्रद्रष्ट्री ऋषिकाएँ, विदुषी स्त्रियाँ, ऋग्वेद में देवी

ब्रह्मवादिनी घोषा-

वैदिक वाङ्मय एवं वैदिक संस्कृति का सम्पूर्ण भारतीय संस्कृति में अप्रतिम स्थान है, जिसका निर्माण अध्यात्म की सुदृढ़ भित्ति पर उन त्रिकालदर्शी ऋषियों द्वारा हुआ है, जो दिव्य दृष्टि सम्पन्न, रागद्वेष शून्य एवं समदर्शी थे। अध्यात्म की इस पृष्ठ भूमि के निर्माण में अनेक स्त्रियों की सहभागिता अत्यन्त महत्वपूर्ण रही है जो कि वैदिक वाङ्मय का अभिन्न अंग हैं एवं ऋषिकाओं के रुप प्रतिष्ठित हैं। वैदिक धर्मशास्त्रों में स्त्रियों के वेदाध्ययन करने के बहुत से प्रमाण है। हारीत धर्मसूत्र में उल्लिखित हैः-

द्विविधाः स्त्रियाः। ब्रह्मवादिन्यः सद्योवध्वश्च। तत्र ब्रह्मवादिनीनामुपनयम्, अग्नीन्धं, वेदाध्ययनं स्वगृहे च भिक्षाचर्येति। ब्रह्मवादिनी और सद्योवधू दो प्रकार की स्त्रियाँ होती हैं। इनमें से ब्रह्मवादिनी-यज्ञोपवीत, वेदाध्ययन तथा स्वगृह में भिक्षा करती हैं। यमस्मृति में कहा गया है- पूर्वकाल में कुमारियों का उपनयन, वेदारम्भ तथा गायत्री उपदेश होता था-

पुराकल्पे कुमारीणां मौञ्जीबन्धमिष्यते,

अध्यापनं च वेदानां सावित्रीवचनं तथा।

स्त्रियाँ न केवल ब्रह्मचर्य का पालन एवं वेदाध्ययन ही करती थीं, अपितु ऋग्वेद के अनेक सूक्तों का आविष्कार स्त्रियों द्वारा ही हुआ है। वे इन सूक्तों की मंत्रद्रष्ट्री अथवा संकलनकर्त्री रही हैं। ऋग्वेद के 10-134, 10-39, 40, 10.125, 10-91, 10-15, 10-107, 10-109, 10-154, 10-159, 10-189, 5-28, 8-91 आदि अनेक सूक्तों की मन्त्रद्रष्टा ऋषिकाएँ हैं। वृहद्देवता के द्वितीय अध्याय में ऋग्वेद की ऋषिकाओं की सूची इस प्रकार हैः-

घोषा, गोधा, विश्ववारा अपाला, उपनिषद्, निषद्, ब्रह्मजाया अगस्त्य की भगिनी, अदिति, इन्द्राणी और इन्द्र की माता, सरमा, रोमशा, उर्वशी, लोपामुद्रा और नदियाँ, यमी, शाश्वती, श्री, लाक्षा सार्पराज्ञी, वाक् श्रद्धा, मेधा, दक्षिणा, रात्री और सूर्या-सावित्री आदि।1

कुछ प्रमुख ब्रह्मवादिनी स्त्रियों का विवरण वैदिक वाङ्मय में निम्नलिखित रुप में प्राप्त होता हैः-

घोषा ऋषि कक्षीवान् की पुत्री थी। इनको कुष्ठ रोग हो गया था। अश्विनीकुमारों की कृपा से इनका रोग नष्ट होने पर इनका विवाह हुआ। ये बहुत ही प्रसिद्ध विदुषी एवं ब्रह्मवादिनी थीं। इन्होंने ब्रह्मचारिणी कन्या के समस्त कर्तव्यों का उल्लेख दो सूक्तों में किया है।

ब्रह्मवादिनी सूर्या-

सूर्य की पुत्री का नाम सूर्या है। इन्हें ऋग्वेद में देवी और ऋषिका भी कहा गया है। देवी सूर्या ने दशम् मण्डल के 85 वें सूक्त का साक्षात्कार किया था। यह सूक्त विवाह सम्बन्धी है। आरम्भ की ऋचाओं में चन्द्रमा के साथ सूर्य कन्या सूर्या के विवाह का वर्णन है। वेद शास्त्रों में जितने आख्यान हैं, उन सबके आध्यात्मिक, आधिदैविक और आधिभौतिक तीनो अर्थ होते हैं। वैदिक ऋचाओं के भी तीन अर्थ हैं। वे आध्यात्मिक होने के साथ ऐतिहासिक तथ्यों से भी युक्त हैं। जहाँ चन्द्र और सूर्य को नक्षत्र रुप में ग्रहण किया है वहाँ आलंकारिक भाषा में आध्यात्मिक वर्णन है, और जहाँ उनको अधिष्ठात्री देवता के रुप में लिया गया है वहाँ प्रत्यक्ष वैसा ही व्यवहार हुआ है। एक मंत्र में सूर्या कहती हैं-

इमां त्वमिन्द्र मीढ्वः सुपुत्रां सुभगां कृणु
दशास्यां पुत्राना धेहि पतिमेकादशं कृधि।2

अर्थात् हे अभिलाषापूरक इन्द्र! तुम इस वधू को शोभन पुत्रों वाली एवं सौभाग्यशालिनी बनाओ, तुम इसमें मुझे दस पुत्रों को दो एवं मेरे पति को ग्यारहवां करो। हे वधू तुम अपने अच्छे व्यवहार से श्वसुर, सास देवर और ननद के प्रति महारानी बनोः

सम्राज्ञी श्वशुरे भव सम्राज्ञी श्वश्रवां भव।
ननान्दरि सम्राज्ञी भव सम्राज्ञी अधि देवृषु।3

ब्रह्मवादिनी वाक्-

वाक् अम्भृण ऋषि की कन्या थीं। यह प्रसिद्ध ब्रह्मज्ञानिनी थी और इन्होंने भगवती देवी के साथ अभिन्नता प्राप्त कर ली थी। ऋग्वेद संहिता के दशम् मण्डल के 125 वें सूक्त में देवी सूक्त के नाम से इनके द्वारा रचे गए आठ मंत्र हैं। चण्डी पाठ के साथ इन आठ मंत्रो के पाठ का बड़ा माहात्म्य माना जाता है। इन मंत्रो में स्पष्टतया अद्वैतवाद का सिद्धान्त प्रतिपादित है। कतिपय मंत्र द्रष्टव्य हैं -

अहं रुद्रेभिर्वसुभिश्चराम्यहमादित्यैरुत विश्वेदेवैः
अहं मित्रावरुणोभा बिभर्म्यहमिन्द्राग्नी अहमश्विनोभा।4

अर्थात् मैं रुद्रों, वसुओं, आदित्यों एवं सभी देवों के साथ विचरण करती हूँ। मैं मित्र, वरुण, इंद्र, अग्नि एवं अश्विनी कुमारों को धारण करती हूँ।एक मंत्र में वह स्वयं को राष्ट्र की स्वामिनी धन देने वाली ज्ञान वाली एवं यज्ञोपयोगी वस्तुओं में सर्वोत्तम बताती हैः-

अहं राष्ट्री संगमनी वसूनां चिकितुषी प्रथमा यज्ञियानाम्
तां मा देवा व्यदधुः पुरुत्रा भूरिस्थात्रां भूर्यावेशयन्तीम्।5

वह कहती हैं कि मैं ही सब भुवनों का निर्माण करती हुई वायु के समान चलती हूँ। मेरी महिमाएँ ऐसी हैं कि धरती और द्युलोक से भी बड़ी हूँ।

अहमेव वात इव प्र वाम्यारभमाणा भुवनानि विश्वा
परो दिवा पर एना पृथिव्यैतावती महिना सं बभूव।6

ब्रह्मवादिनी उशिज्-

दीर्घतमा ऋषि की पत्नी का नाम उशिज था। प्रसिद्ध महर्षि कक्षीवान् इन्हीं के सुपुत्र थे। ऋग्वेद के प्रथम मण्डल के 116 से 121 तक के मन्त्र इन्हीं के द्वारा संकलित हैं। प्रसिद्ध ब्रह्मवादिनी घोषा इन्हीं की पौत्री थीं। इनका सम्पूर्ण कुटुम्ब ब्रह्मपरायण था।

ब्रह्मवादिनी विश्ववारा-

समिद्धो अग्निर्दिवि शोचिरश्रेत्प्रत्यङ्डुषसमुर्विया विभाति
एति प्राची विश्ववारा नमोर्भिर्देवाँ ईडानां हविषा घृताची।7

अर्थात् प्रज्ज्वलित अग्नि दीप्तियुक्त आकाश में तेज फैलाते हैं एवं उषाकाल में विस्तृत होकर शोभा पाते हैं। स्तोत्रों द्वारा इन्द्र आदि की प्रशंसा करती हुई विश्ववारा पूर्वाभिमुख जाती हैं। उपर्युक्त मन्त्र सहित ऋग्वेद के पंचम मण्डल के अट्ठाइसवें सूक्त के अन्य छह मन्त्रों की द्रष्ट्री महर्षि अत्रि के वंश में उत्पन्न

विदुषी विश्ववारा हैं। अपनी तपस्या से उन्होंने ऋषि पद को प्राप्त किया था। इन मंत्रों के अध्ययन से जान पड़ता है कि ये अग्नि की उपासिका थीं।

ब्रह्मवादिनी अपाला-

अपाला अत्रि मुनि के वंश में ही उत्पन्न हुई थीं। इनको कुष्ठ रोग हो गया था। इन्होंने इन्द्र देव की आराधना करके उनको प्रसन्न किया। उनके वरदान से इनका कुष्ठ रोग मिट गया। वे ब्रह्मवादिनी थीं। ऋग्वेद के अष्टम मण्डल के 91वें सूक्त की सात ऋचाएँ इनके द्वारा ही संकलित की गईं।

ब्रह्मवादिनी रोमशा-

रोमशा बृहस्पति जी की पुत्री तथा भावभव्य की धर्मपत्नी थीं। इन्होने ऋग्वेद के प्रथम मण्डल के 126 वें सूक्त की सात ऋचाओं का संकलन किया हैं। वेद और शास्त्रों की अनेक शाखाएँ ही इनके शरीर के रोम हैं और वे इसका प्रचार करती थीं इसलिए रोमशा कहलायीं।

ब्रह्मवादिनी शश्वती-

ये अङ्गिरा ऋषि की कन्या थीं। ऋग्वेद के अष्टम् मण्डल के प्रथम सूक्त की 34 वीं ऋचा का संकलन इनके द्वारा हुआ हैं।

ब्रह्मवादिनी ममता-

ये दीर्घतमा ऋषि की माता थीं। जो बहुत बड़ी विदुषी और ब्रह्मज्ञान सम्पन्न थीं। अग्नि देव के लिये इनका स्तुति पाठ ऋग्वेद संहिता के प्रथम मण्डल के दशम् सूक्त की एक ऋचा में मिलता हैं।

वाचक्नवी गार्गी-

वैदिक वाङ्मय जगत में ब्रह्मवादिनी विदुषी गार्गी का नाम अति प्रसिद्ध हैं। इनके पिता का नाम वचक्नु था। गर्ग गोत्र में उत्पन्न होने से लोग इन्हे गार्गी कहते थे और इनका गार्गी नाम ही प्रचलित था। वृहदारण्यक उपनिषद् में इनके याज्ञवल्क्य के साथ शास्त्रार्थ का प्रसंग वर्णित हैं। इन्होंने याज्ञवल्क्य ऋषि से पूछा -भगवन् ! यह जो कुछ पार्थिव पदार्थ हैं वह सब जल में ओतप्रोत हैं किन्तु जल किसमें ओतप्रोत हैं ? याज्ञवल्क्य ने उत्तर दिया जल वायु में ओत प्रोत हैं।

इस प्रकार क्रमशः वायु, आकाश, अन्तरिक्ष,गन्धर्व-लोक, आदित्य-लोक, चन्द्रलोक, नक्षत्रलोक, देवलोक, इन्द्रलोक और प्रजापति लोक के सम्बन्ध में प्रश्नोत्तर होने पर जब गार्गी ने पूछा कि 'ब्रह्मलोक किसमें ओतप्रोत हैं?' तब याज्ञवल्क्य ने अति प्रश्न कहकर गार्गी को चुप रहने को कहा। वह विदुषी थीं उन्होंने याज्ञवल्क्य का अभिप्राय समझ चुप रहना ही उचित समझा। तत्पश्चात् उनके दो और प्रश्नों के उत्तर में याज्ञवल्क्य ने अक्षर तत्व का जिसे परब्रह्म परमात्मा कहते हैं; भलीभाँति निरुपण किया।

ब्रह्मवादिनी मैत्रेयी-

मैत्रेयी याज्ञवल्क्य की पत्नी थीं । उन्होंने मैत्रेयी की सुपात्रता देखकर उन्होंने आत्मा विषयक ज्ञान दिया था: आत्मा वा अरे द्रष्टव्य: श्रोतव्यो मन्तव्यो निदिध्यासितव्यो मैत्रेयि आत्मनो वा अरे दर्शनेन श्रवणेन मत्वा विज्ञानेनेदं सर्व विदितम्।8

' मैत्रेयी ! तुम्हें आत्मा का ही दर्शन , श्रवण , मनन और निदिध्यासन करना चाहिए। उसी के दर्शन , श्रवण मनन और यथार्थ ज्ञान से सब कुछ ज्ञात हो जाता हैं।

मैत्रेयी याज्ञवल्क्य का अमृतमय ब्रह्मोपदेश पाकर कृतार्थ हो गयीं। ब्रह्मावादिनी संन्यासिनी सुलभा ने राजा जनक के साथ शास्त्रार्थ किया था। व्याकरण शास्त्र के भी कतिपय स्थलों पर ऐसे उल्लेख हैं जिनसे सिद्ध होता है कि वेदों का अध्ययन अध्यापन स्त्रियों का कार्यक्षेत्र रहा हैं। इडश्च - 3/3/21 के महाभाष्य में लिखा हैः-

'उपेत्याधीयतेऽस्या उपाध्यायी उपाध्याया।'

अर्थात जिनके पास जाकर कन्याएँ वेद के एक भाग तथा वेदांगों का अध्ययन करें वह उपाध्यायी या उपाध्याया कहलाती हैं।

यजुर्वेद में कहा गया हैः-

कुलायनी , घृतवती पुरन्धिः स्योने सीद सदने पृथिव्याः
अभित्वा रुद्रा वसवो गृणन्त्विमा ब्रह्म पीपिहि
सौभगायाश्विनाध्वर्यू सादयामिहत्वा।9

अर्थात हे स्त्री ! तुम कुलवती , घृत आदि पौष्टिक पदार्थों का उचित उपयोग करने वाली, तेजस्विनी, बुद्विमती, सत्कर्म करने वालीहोकर सुखपूर्वक रहो तुम ऐसी गुणवती और

विदुषी बनो कि रुद्र और वसु भी तुम्हारी प्रशंसा करें। सौभाग्य प्राप्ति के लिये इन वेदमंत्रों के अमृत का बार-बार भली प्रकार पान करो। विद्वान तुम्हें शिक्षा देकर इस प्रकार की उच्च स्थिति पर प्रतिष्ठित कराएँ।

कात्यायन श्रौत सूत्र - 1/1/7 तथा 4/1/22 एवं 20/06/12 में ऐसे स्पष्ट आदेश हैं कि अमुक वेद मंत्रों का उच्चारण स्त्री करे। लाट्यायन श्रौत सूत्र में पत्नी द्वारा सस्वर सामवेद के मन्त्रों के गायन का विधान है।

शतपथ ब्राह्मण में याज्ञवल्क्य ऋषि की पत्नी मैत्रेयी को ब्रह्मवादिनी कहा है:-

तयोर्ह मैत्रेयी ब्रह्मवादिनी बभूव।10

तैत्तिरीय ब्राह्मण में सोम द्वारा सीता सावित्री ऋषिका को तीन वेद देने का वर्णन विस्तारपूर्वक आता है:-

'तं त्रयो वेदा अन्वसृज्यन्त। अथ ह सीता सावित्री ।
सोमं राजानं चकमे । तस्या उ ह त्रीन् वेदान प्रददौ।11

ऋग्वेद12 का भाष्य करते हुए स्वामी दयानंद लिखते हैं कि राजा ऐसा यत्न करे जिससे सब बालक और कन्यायें ब्रह्मचर्य से विद्यायुक्त होकर समृद्धि को प्राप्त हों।

यजुर्वेद13 में कथित है कि राजा को प्रयत्नपूर्वक अपने राज्य में सब स्त्रियों को विदुषी बनाना चाहिये।

ऋग्वेद14 कहता है कि जितनी कुमारी हैं वे विदुषियों से विद्याध्ययन करें और वे कुमारी ब्रह्मचारिणी उन विदुषियों से ऐसी प्रार्थना करें कि आप हम सबको विद्या और सुशिक्षा से युक्त करें।

अथर्ववेद15 में नववधू को सम्बोधित करते हुये उपदेश दिया गया है कि हे वधू । तेरे आगे, पीछे, मध्य में, अन्त में सर्वत्र वेद विषयक ज्ञान रहे, और वेद ज्ञान को प्राप्त करके तदनुसार अपना सारा जीवन बना।

ऋग्वेद16 में नारी को कहा गया है कि 'स्त्री हि ब्रह्म बभूविथ' अर्थात स्त्री निश्चित रुप से ब्रह्म के पद को पाने के योग्य बन सकती है।

उपर्युक्त समग्र अध्ययन से यह स्पष्टतः ज्ञात होता है कि वैदिक धर्मशास्त्रों में स्त्रियों के ऋषिकाएँ होने, वेदानुशीलन करने, वेदमंत्रों के पाठ करने के असंख्यों प्रमाण हैं। इन प्रमाणों पर ध्यान न देकर गिने चुने कुछ प्रक्षिप्त श्लोकों/मन्त्रों के आधार पर स्त्रियों को वेदाध्ययन हेतु अनधिकारिणी सिद्ध करना सर्वथा असंगत है तथा वैदिक वाङ्मय ब्रह्मवादिनी स्त्रियों के योगदान के बिना अपूर्ण है।

References

1.	वृहद्देवता	-	24/84-86
2.	ऋग्वेद	-	10/85/45
3.	ऋग्वेद	-	10/85/46
4.	ऋग्वेद	-	10/125/1
5.	ऋग्वेद	-	10/125/3
6.	ऋग्वेद	-	10/125/8
7.	ऋग्वेद	-	5/28/1
8.	वृहदारण्यकोपनिषद्	-	द्वितीय अध्याय, चतुर्थ ब्राह्मण
9.	यजुर्वेद	-	14/2
10.	शतपथ ब्राह्मण	-	14/7/3/1
11.	तैत्तिरीय ब्राह्मण	-	2/3/10/1,3
12.	ऋग्वेद		-6/44/18
13.	यजुर्वेद	-	10/7
14.	ऋग्वेद		-2/41/16
15.	अथर्ववेद	-	14/1/64
16.	ऋग्वेद		-8/33